कृषि मुख्य वैज्ञानिकों की जी20 बैठक वाराणसी,

संजीव राज [1]एवं सूरज कुमार[1]

भारत की जी-20 अध्यक्षता के तहत, कृषि मुख्य वैज्ञानिकों (एमएसीएस) की बैठक 17-19 अप्रैल, 2023 के दौरान वाराणसी, भारत में आयोजित की गई। जी-20 सदस्य देशों, आमंत्रित देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने विविध, सुलभ और टिकाऊ कृषि और खाद्य प्रणालियों की दिशा में परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए कृषि में अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) प्राथमिकताओं पर चर्चा और पहचान करने के लिए एमएसीएस में भाग लिया। कोविड-19 महामारी और जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक खाद्य सुरक्षा संबंधी चिंताएँ बढ़ गई हैं। इसके लिए "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" की भावना से बहुस्तरीय समाधान की आवश्यकता है। इसलिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचारों का लाभ उठाकर टिकाऊ कृषि और खाद्य प्रणालियों की दिशा में अपने प्रयासों को मजबूत करके वैश्विक खाद्य सुरक्षा और पोषण की रक्षा के संदर्भ में व्यापक चर्चा की गई। 1 फरवरी 2022 से, यूक्रेन में युद्ध का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर और भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इस मुद्दे पर चर्चा हुई और जी20 सदस्यों द्वारा यह स्वीकार किया गया कि अंतरराष्ट्रीय कानून और शांति तथा स्थिरता की रक्षा करने वाली बहुपक्षीय प्रणाली को बनाए रखना आवश्यक है। इसमें संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में निहित सभी उद्देश्यों और सिद्धांतों की रक्षा करना और सशस्त्र संघर्षों में नागरिकों और बुनियादी ढांचे की सुरक्षा सहित अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का पालन करना शामिल है। परमाणु हथियारों का उपयोग या उपयोग की धमकी अस्वीकार्य है। संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान, संकटों के समाधान के प्रयास, साथ ही कूटनीति और संवाद महत्वपूर्ण हैं। साथ ही किसानों और उपभोक्ताओं के लाभ के लिए खाद्य फसलों की पोषक तत्वों से भरपूर किस्में उपलब्ध कराने के लिए समन्वित अनुसंधान एवं विकास प्रयासों को बढ़ाने का आह्वान किया गया।

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के 2030 एजेंडा और जी20 मटेरा और बाली घोषणाओं इस बाथक में याद करते हुए, अनुसंधान और नवाचार के महत्व और टिकाऊ कृषि तथा खाद्य प्रणालियों में स्वीकार्य शर्तों के साथ स्वेच्छा से ज्ञान, अनुभव और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने का आह्वान करना सराहनीय कदम है। साथ ही स्थानीय समुदायों सहित हितधारकों की क्षमता में सुधार के लिए कृषि और संबंधित विज्ञान में अनुसंधान और इसके कार्यान्वयन को तेज करने के लिए प्रयास किया जाएगा। स्वदेशी लोग; औरत; युवा; छोटा धारक; पारिवारिक और सीमांत किसान के माध्यम से सतत कृषि विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संगठनों के बीच प्रभावी सहयोग को गहरा करने का लक्ष्य है।

कृषि और खाद्य प्रणालियों के निर्माण, खाद्य सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव के बिना जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन के लिए समाधान, जैव विविधता की रक्षा तथा उत्पादकता और लाभ में वृद्धि करने में मदद करने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बीच अनुसंधान एवं विकास सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है। पर्यावरणीय स्वास्थ्य

[1] राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय नई दिल्ली

और उत्पादकता परिणामों में सुधार के लिए फसल और पशुधन प्रजनन नवाचारों की क्षमता को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। कृषि अनुसंधान और नवाचारों में प्रभावी निवेश से जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन बनाने की क्षमता में वृद्धि होगी। अनुसंधान एवं विकास में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सहयोग की सफलता नवाचारों को बढ़ाने और सूचना साझा करने पर निर्भर करती है। किसानों के लिए स्थिरता और परिणामों में सुधार के लिए कृषि और खाद्य प्रणालियों के डिजिटल परिवर्तन को महत्व दिया जा रहा है। हितधारकों की जरूरतों को पूरा करने वाले नवीन उपकरणों, कृषि प्रथाओं और प्रौद्योगिकियों को अपनाने और संचार में सुधार के लिए सार्वजनिक-निजी निवेश और भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। खाद्य उत्पादन और सुरक्षा, जलवायु लचीलेपन, चक्रीय अर्थव्यवस्था सिद्धांतों और खाद्य हानि और बर्बादी को रोकने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों के जिम्मेदार, टिकाऊ और समावेशी उपयोग और अनुप्रयोग में सुधार के लिए अनुसंधान और विस्तार में सहयोग किया जाना आवश्यक है।

कृषि और खाद्य प्रणालियों की ओर परिवर्तन, कृषि विविधता को बढ़ाने और खाद्य सुरक्षा और पोषण में सुधार के लिए स्थानीय रूप से अनुकूलित फसलों का महत्व है। गेहूं पहल की उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए, हम जलवायु-लचीला, पौष्टिक, स्थानीय रूप से अनुकूलित, स्वदेशी और कम उपयोग वाले अनाज के लिए समावेशी समाधान प्रदान करने के लिए अनुसंधान एवं विकास प्रयासों को जारी रखा जाना चाहिए। अनाज फसलों के अनुसंधान सहयोग और सार्वजनिक जागरूकता को मजबूत करने के लिए, हम G20 सदस्य देशों, गैर-सदस्य देशों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और निजी की स्वैच्छिक सदस्यता के साथ "बाजरा और अन्य प्राचीन अनाज अंतर्राष्ट्रीय शोध पहल (महर्षि)" के लॉन्च की सराहना की गई।

कृषि को जलवायु संकट के समाधान का एक हिस्सा बनाने के लिए जलवायु परिवर्तन, टिकाऊ और जलवायु-लचीली कृषि प्रथाओं और कार्यों पर एक कार्यशाला आयोजित करने के लिए भारत का प्रस्ताव है। वन हेल्थ मुद्दों के बीच ट्रांसबाउंड्री बीमारियों, रोगाणुरोधी प्रतिरोध और ज़ूनोटिक रोग के उद्भव की रोकथाम पर सहयोग और अनुसंधान की बढ़ती आवश्यकता के लिए कार्य किया जाएगा। मौजूदा अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रयासों की नकल किए बिना, सहयोग के माध्यम से अनुसंधान करने के अवसरों की पहचान करने के लिए 'वन हेल्थ' दृष्टिकोण पर एक विशेषज्ञ बैठक आयोजित किया जाएगा।

एमएसीएस 2023 के आयोजन के लिए उनके नेतृत्व, कड़ी मेहनत और उत्साह के लिए भारतीय अध्यक्षता को सराहा गया ।

मिलेट्स और अन्य प्राचीन अनाज अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान पहल (महर्षि)

G20 MACS वैश्विक अनुसंधान सहयोग प्राथमिकता (GRCP) के तत्वावधान में, मिलेट्स और अन्य कम उपयोग वाले जलवायु लचीले और पौष्टिक अनाज पर अनुसंधान सहयोग की सुविधा के लिए " मिलेट्स और अन्य प्राचीन अनाज अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान पहल (MAHARISHI)" को लॉन्च किया गया है। यह संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) द्वारा शुरू किए गए अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष 2023 (IYoM 2023) कार्यक्रम के तहत किए गए प्रयासों का पूरक होगा। बिखरे

हुए प्रयासों के कारण विभिन्न अनाजों पर प्रभाव प्राप्त करना कठिन है। इस समस्या के समाधान के लिए एक रूपरेखा विकसित की जानी चाहिए जिसे इस पहल के तहत अनाज पर लागू किया जा सके।

इस बात पर ज़ोर दिया जा रहा है कि कोई भी G20 सदस्य स्वेच्छा से इस पहल के लिए धन, वैज्ञानिक विशेषज्ञता और अन्य संसाधनों का योगदान कर सकता है। महर्षि इन अनाजों पर अनुसंधान को आगे बढ़ाने के प्रयास करते हुए सार्वजनिक और निजी संगठनों के साथ सहयोग करने का इरादा रखते हैं। G20 MACS मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुरूप, यह GRCP दो वर्षों तक सीमित होगा, और 2025 के लिए G20 MACS के दौरान एक लिखित रिपोर्ट प्रदान की जाएगी।

इस प्रयास की गतिविधियाँ 2025 के बाद भी जारी रह सकती हैं, लेकिन इस बिंदु पर, किसी भी भविष्य की स्टॉकटेकिंग रिपोर्ट को छोड़कर, गतिविधि पर G20 MACS में चर्चा, प्रस्तुत या रिपोर्ट नहीं की जानी चाहिए। गेहूं पहल से सीख लेते हुए, महर्षि मौजूदा प्रयासों के दोहराव से बचने का प्रयास करते हुए निम्नलिखित लागत प्रभावी गतिविधियों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा:

- अनुसंधान निष्कर्षों के प्रसार को बढ़ाने और अनुसंधान अंतराल और जरूरतों की पहचान करने के लिए पहचानी गई अनाज फसलों पर काम करने वाले शोधकर्ताओं और संस्थानों को जोड़ने के लिए तंत्र स्थापित करना। इसमें शोध परिणामों के खुली पहुंच प्रकाशन का समर्थन करना भी शामिल होगा।
- खुले और सुलभ तरीके से अनुसंधान और सूचना साझा करने को प्रोत्साहित करने के लिए शोधकर्ताओं को जोड़ने, डेटा का आदान-प्रदान करने, संचार उत्पादों और विषयगत संक्षिप्त जानकारी साझा करने के लिए वेब प्लेटफ़ॉर्म स्थापित करना।
- स्वैच्छिक और पारस्परिक रूप से सहमत शर्तों, क्षमता-निर्माण गतिविधियों और अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान कार्यशालाओं और सम्मेलनों पर ज्ञान हस्तांतरण का आयोजन करना । ये गतिविधियाँ शोधकर्ताओं को इन अनाजों पर काम करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करेंगी।
- वैज्ञानिकों को उनके अनुसंधान हितों का समर्थन करने और बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और नवाचार पुरस्कार और/या पुरस्कार प्रदान करना।

कार्यान्वयन

महर्षि सचिवालय भारतीय मिलेट्स अनुसंधान संस्थान (आईआईएमआर), हैदराबाद में स्थित होगा, जिसमें इंटरनेशनल क्रॉप्स रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर सेमी-एरिड ट्रॉपिक्स (आईसीआरआईएसएटी), एक सीजीआईएआर, अंतर्राष्ट्रीय संगठन (आईओ) और अनुसंधान संस्थानों को तकनीकी सहायता प्रदान की जाएगी।